शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह- फरवरी 2020 पंचम वर्ष अंक-09

हर साल 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है,
यानी अपनी ज़बान का सम्मान करने का दिन

हर भाषा, हर बोली को सलाम

ढाका विश्वविद्यालय के उन छात्रों को समर्पित, जो **बांग्ला भाषाओं को मान्यता देने की लड़ाई में मार** दिए गए थे

2,500 भाषाएं दुनिया में ऐसी हैं, जो ख़त्म होने की कग़ार पर पहुंच गई हैं

25% भाषाएं विश्व की ऐसी हैं, जिन्हें 1,000 से भी कम लोग बोलना जानते हैं

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

विश्व में बोली जाती हैं लगभग 6900 भाषाएं

42.2 करोड़ लोगों की मातृभाषा हिंदी है यानी दुनिया में करीब **4.46 फीसदी** लोग सिर्फ हिंदी बोलते हैं। अन्य मातृभाषी लोगों के बीच भी हिंदी दूसरी भाषा के रूप में लोकप्रिय है।

भारत में **1652 भाषाएं** बोली जाती हैं। भारत में फिलहाल **1365 मातृभाषाएं** हैं, जिनका क्षेत्रीय आधार अलग-अलग है

दुनिया में अगले 40 साल में **4 हजार** से अधिक भाषाओं के खत्म होने की संभावना

राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा
राजीव गांधी शिक्षा मिशन, छत्तीसगढ़

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

एजेंडा एक: प्राथमिक शिक्षक अब सीखेंगे बच्चों की भाषा

प्रारंभिक स्तर पर बच्चे को घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच बहुत संघर्ष करना पड़ता है | बच्चे के संघर्ष को समझना या महसूस करना हो तो किसी अन्य भाषा का चैनल खोल कर बैठ जाएँ और देखें कि आपको उसमे से कितना कुछ समझ में आ रहा है | आप तो अनुभवी हैं और आपने दुनिया देखी है तो आप उन दृश्यों से बहुत कुछ अर्थ निकाल भी सकते हैं पर उन बच्चों की सोचें जो आपकी कक्षा में हैं और आप उनके घर की दुनिया और भाषा से हटकर बहुत सारा पुस्तकीय ज्ञान उन पर उड़ेलने की कोशिश कर रहे हैं वो भी यह जाने बिना कि बच्चों को कुछ समझ में आ रहा है या नहीं | इसी बात को ध्यान में रखकर राज्य में माननीय मुख्यमंत्रीजी द्वारा गणतन्त्र दिवस के अवसर पर बस्तर जिले में यह घोषणा की गयी है कि हम बच्चों को प्रारंभिक स्तर पर उनकी अपनी भाषा में शिक्षा सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी |

इस कार्यक्रम के संबंध में मान्यताएं:

- बच्चों को प्रारंभिक स्तर पर कक्षा पहली एवं दूसरी में उनके घर की भाषा का इस्तेमाल कर अध्यापन करवाया जाना चाहिए |
- धीरे धीरे बच्चों के घर की भाषा से स्कूल की भाषा में कक्षा तीसरी तक आ जाना चाहिए |
- सीमित अवधि के प्रशिक्षण से कोई भाषा सीखी नहीं जा सकती | भाषा सीखने के लिए सतत प्रशिक्षण, एक्सपोजर एवं उनका उपयोग होना आवश्यक है |
- स्थानीय भाषाओं को सिखाने के लिए राज्य स्तर पर क्षमता विकास के बदले स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण डिजाइन कर क्रियान्वयन की जिम्मेदारी देनी चाहिए |

इस कार्यक्रम को लागू करने के पीछे के उद्देश्य:

- बच्चों को प्रारंभिक कक्षाओं में उनके घर की भाषा में शिक्षा त्यवस्था सुलभ कराना
- घर की भाषा से स्कूल की भाषा में आने के लिए बच्चों को इस सत्र से द्विभाषी पुस्तकें उपलब्ध करवाना
- संसाधन मैपिंग कर स्थानीय भाषा, बच्चों की कक्षावार-भाषावार संख्या के आधार पर कक्षा पहली दूसरी के लिए हिन्दी भाषा के पुस्तकों की संख्या की गणना करना
- ऐसे शिक्षकों की पहचान करना जो संकुल स्तर पर अन्य शिक्षकों को बच्चों की भाषा सिखाने में सतत सहयोग कर पाने हेतु प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी की त्यवस्था करना
- शिक्षकों को बच्चों के घर की भाषा सीखने के लिए स्थानीय स्तर पर आवश्यक त्यवस्थाएं करना

कार्यक्रम क्रियान्वयन का डिजाइन-

इस कार्यक्रम को राज्य स्तर से न आयोजित कर जमीनी स्तर पर संकुल/ विकासखंड स्तर से करना होगा | इस हेतु आप निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं-

- संसाधन मैपिंग के आधार पर संकुल या विकासखंड स्तर पर बच्चों के घर में प्रमुखता से बोले जाने वाली भाषाओं की पहचान की जाएगी |
- मैपिंग के आधार पर एवं रूचि/ योग्यता के अनुरूप ऐसे शिक्षकों की पहचान की जाएगी जो अपने साथी शिक्षकों को बच्चों की भाषा सिखाने में सहयोग कर सकें |
- स्थानीय स्तर पर ऐसा एक समूह बनाकर भाषाई आधार पर प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का गठन कर संकुल या विकासखंड स्तर पर किसी सोशियल मीडिया के उपयोग से एक दूसरी शालाओं से सीखने का इंतजाम किया जाएगा |
- स्थानीय स्तर एवं त्यापक स्तर पर भी ऐसे प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को एक दूसरे से जुड़कर सीखने का अवसर दिया जा सकेगा |
- कम्युनिटी का गठन करते समय उसका नाम देने पहले जिला फिर भाषा फिर संकुल या विकासखंड का नाम दिया जाए तो उनकी पहचान करना आसान हो सकेगा | जैसे **सुकमा गोंडी कोंटा पीएलसी / बस्तर धुर्वा बकावंड पीएलसी** |

स्थानीय स्तर पर पीएलसी के सहयोग से सामग्री निर्माण -

उपरोक्तानुसार गठित विभिन्न प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी द्वारा निम्नलिखित प्रकार की सामग्री तैयार की जाएगी-

- **स्थानीय भाषाओं में वर्णमाला चार्ट-**

  पीएलसी द्वारा विभिन्न भाषाओं में वर्णमाला चार्ट तैयार किया जाकर सभी चयनित शालाओं में उनके भाषा समूह के अनुसार उपलब्ध कराया जाएगा |

- **शिक्षकों के लिए भाषा सहायिका (Bridge Language Inventory-BLI)-**

  शिक्षकों के लिए भाषा सहायिका का खाका हिन्दी में तैयार करने के साथ-साथ लगभग साथ भाषाओं में तैयार किया जाएगा | इनका संकलन करने के साथ साथ हिन्दी में तैयार सामग्री का अनुवाद कर इन्हें अन्य भाषाओं में भी शिक्षकों को उपलब्ध कराया जाएगा | इससे भाषा के जानकार न होने के बावजूद शिक्षक बच्चों की भाषा में अपनी बात रख सकेंगे एवं नियमित बोले जाने वाले वाक्यों एवं शब्दों को बच्चों की भाषा में बोलना सीख सकेंगे | इस प्रकार से तैयार भाषा सहायिकाओं को शिक्षकों को मुद्रित कर उपलब्ध कराया जाएगा और इसमें निरंतर विकास के लिए शिक्षक मध्याहन भोजन बनाने वाले स्व-सहायता समूहों/

आंगनबाडी सहायिकाओं/ मितानिनों/ पालकों एवं बड़े कक्षा में अध्ययनरत बच्चों की मदद ले सकेंगे |

- **स्थानीय कहानियों/ गीतों का संग्रह कर पठन काड्र्स:**

राज्य में बड़े-बुजुर्गों , उस भाषा को बोलने वाले शिक्षकों, बड़ी कक्षाओं ,आदिवासी छात्रावासों एवं कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में पढने वाले बच्चों के माध्यम से स्थानीय कहानियों/ गीतों का संग्रह किया जाएगा |

- **बड़ी एवं छोटी पुस्तकों को तैयार कर उपलब्ध कराना**

पीएलसी द्वारा विभिन्न भाषाओं में बड़ी एवं छोटी हस्तलिखित पुस्तकों का विकास किया जाएगा | विभिन्न स्थानीय कहानियों को बड़ी पुस्तक के रूप में विकसित किया जाएगा और पढने के विभिन्न उपयुक्त चरणों में इनका इस्तेमाल किया जाएगा ताकि बच्चे स्वतंत्र पठन की दिशा में आगे बढ़ सके |

- **प्रिंट-समृद्ध वातावरण के निर्माण हेतु सुझावात्मक डिजाइन**

पढ़ने के कौशल के विकास के लिए शाला की दीवारों पर प्रिंट समृद्ध वातावरण का होना अत्यंत आवश्यक है | इस हेतु स्थानीय स्तर पर एक सुझावात्मक डिजाइन बनाकर शालाओं को स्थानीय भाषा में इनका प्रदर्शन करने हेतु निर्देशित किया जाएगा |

- **आदिवासी बच्चों के लिए लर्निंग आउटकम पर आधारित प्रायमर का निर्माण**

भविष्य में इन शालाओं में बच्चों के भाषा एवं संस्कृति आधारित पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने की दिशा में पहल करते हुए छोटे छोटे प्रायमर तैयार किए जाएंगे |

- **स्थानीय कला एवं संस्कृति से परिचय कराने हेतु पठन सामग्री**

विभिन्न आदिवासी समूहों के लिए उनकी कला एवं संस्कृति से परिचय कराने हेतु पठन सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी जिसमें मुख्य रूप से उनकी आजीविका, खेल-कूद, रीति-रिवाज, रहन-सहन, भोजन, त्यौहार आदि का संग्रह होगा |

डिजिटल सामग्री

इन बच्चों को डिजिटल माध्यम से विभिन्न सामग्री तैयार कर उपलब्ध कराई जाएगी जिन्हें वे अपने घर पर मोबाइल से या स्मार्ट क्लास के माध्यम से देख सकेंगे | भाषा सीखने, बच्चों को सिखाने की रोचक विधियां, स्थानीय गीत, कविता, कहानियाँ एवं सहायक सामग्री निर्माण आदि के लिए विभिन्न शिक्षक निर्मित वीडियोज तैयार किये जाएंगे |

लक्ष्य यह है कि मातृभाषा दिवस से शुरुआत कर आगामी सत्र शुरू होते तक सभी शिक्षक अपने बच्चों की भाषा में कक्षा के भीतर वार्तालाप कर सकेंगे |

एजेंडा दो: आपरेशन बहुत सफल रहा पर मरीज मर गया

आपने इनपुट आउटपुट के बारे में सुना ही होगा |उदाहरण के लिए खेती में हम कितना खाद, पानी, बीज और मेहनत करते हैं, हम अपेक्षा करते हैं कि उससे अधिक या कम से कम उतना फसल तो हमें मिले | यदि आप खूब मेहनत करते हैं पर आपकी फसल नष्ट हो जाती है तो इसका मतलब यह हुआ कि आपने बहुत सारा इनपुट दिया पर आपका आउटपुट शून्य है | इसे इस वाक्य से भी समझा जा सकता है- "आपरेशन बहुत सफल रहा पर मरीज को बचाया नहीं जा सका"

ऐसा ही कुछ हमारी प्राथमिक शालाओं में हो रहा है | अपनी अपनी शाला में इनपुट का अनुमान लगाएं | वेतन, विभिन्न अनुदान, बच्चों को विभिन्न सुविधाएं जैसे पाठ्यपुस्तक, गणवेश, मध्याह्न भोजन,विभाग को चलाने का बजट आदि इनपुट के भीतर आएँगे | प्राथमिक शाला का आउटपुट कक्षा पांचवीं में सभी अपेक्षित लर्निंग आउटकम को हासिल कर आगे बढना है | पर विभिन्न रिपोर्ट्स यह बताते हैं कि कक्षा पांचवीं में पढने वाले पचास प्रतिशत बच्चे कक्षा दो के स्तर के पाठ भी नहीं पाते | अर्थात जो बच्चा हमारी शाला में एक हजार दिनों से अधिक समय बिता चुका है, उसे दो सौ दिनों में सीख सकने वाली चीज भी हम नहीं सिखा पाए |

यह विभाग के लिए बहुत बड़ी चिंता का विषय है | चलिए हम सब मिलकर सोचें कि कैसे इस कलंक से हम मुक्ति पा सकते हैं, कैसे ऐसी त्यवस्था करें कि हमारे स्कूलों में आने वाले बच्चे उन कक्षाओं में लिए निर्धारित सभी दक्षताएं अच्छे से हासिल कर सके और आगे बढ़ सके | कैसे हम इतने संवेदनशील बनें कि विभिन्न योजनाओं का वास्तविक लाभ बच्चों को दिलवा सकें |

एजेंडा तीन: अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

दिनांक 21-29 फरवरी, 2020 को हम सब अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा सप्ताह का आयोजन करेंगे | इस बार माननीय मुख्यमंत्रीजी द्वारा बच्चों की भाषा में सिखाने की घोषणा की गयी है | चलिए बच्चों की भाषा में सिखाने की इस घोषणा के स्वागत में इस महत्वपूर्ण सप्ताह में हम प्राथमिक शाला के बच्चों को उनके घर की भाषा में कहानी सुनाकर या पुस्तक पढ़ाकर इस सप्ताह को यादगार बनाएं | अपने संकुल के सभी प्राथमिक शालाओं में इस सप्ताह के उपलक्ष्य में बच्चों को उनके घर की भाषा का उपयोग कर सिखाने के साथ-साथ सभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों के घर की भाषा सीखने के लिए स्थानीय स्तर पर उस भाषा के जानकार शिक्षकों के साथ मिलकर पीएलसी का गठन कर भाषा सीखने की शुरुआत करें | **जून में सभी शिक्षक बच्चों की भाषा जानने की घोषणा करें |**

एजेंडा चार: पठन कौशल के लिए शाला विकास योजना

राज्य में माह अप्रेल में पठन कौशल विकास संबंधी कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे | इन कार्यक्रमों को जमीनी स्तर पर आयोजित किये जाने बाबत सभी शालाओं को माह मार्च एवं अप्रेल के लिए शाला विकास योजना अनिवार्यतः बनाई जानी होगी | शाला विकास योजना बनाने हेतु दस्तावेज का प्रारूप सभी को सोशियल मीडिया के माध्यम से भेजा गया है | शाला विकास योजना तैयार करते समय ध्यान में रखने वाले मुख्य बिंदु इस प्रकार है-

1. अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक लोगों को वाचन अभियान की जानकारी देने हेतु बैठकें एवं प्रचार-प्रसार हेतु स्लोगन एवं नारे आदि को दीवार लेखन, मुनादी आदि का काम करवाएं
2. अपने निकट के उच्च प्राथमिक शाला से एक शिक्षक को इस कार्यक्रम के लिए मेंटर के रूप में चयन कर उनके माध्यम से निम्नलिखित कार्य संपादित करवाया जाना तय करें-
    - प्राथमिक शाला में समय समय पर जाकर बच्चों में वाचन कौशल को विकसित करने हेतु किये जा रहे प्रयासों की जानकारी लेते हुए आवश्यक अकादमिक समर्थन
    - बच्चों के वर्तमान स्थिति की जानकारी लेने के लिए बेसलाइन आकलन करने हेतु माताओं का सहयोग लेना
    - मुस्कान पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न पुस्तकों का भरपूर उपयोग करवाना
    - बच्चों को कक्षा में पढने के लिए स्थानीय सामग्री उपलब्ध करवाने में सहयोग करना
    - प्राथमिक शाला में अध्ययनरत बच्चों की माताओं को जागरूक करते हुए उनमें से पढ़ी-लिखी माताओं के पांच सदस्यीय दल को इस कार्यक्रम में बेसलाइन / एंडलाइन में निर्णायक की भूमिका निभाने के लिए तैयार करना
    - टेक्नोलोजी का उपयोग कर पढने में रुचि विकसित किये जाने हेतु उपलब्ध विभिन्न कार्यक्रमों जैसे गूगल बोलो एप्प आदि का व्यापक प्रचार प्रसार
    - माताओं के उन्मुखीकरण में आवश्यक समर्थन देना
3. बच्चों को पढ़ना सीखने में सहयोग करने माताओं का उन्मुखीकरण
4. निर्णायक के रूप में कार्य करने 4-5 स्थानीय महिलाओं की पहचान
5. बच्चों का वाचन कौशल के आधार पर बेसलाइन/ एंडलाइन
6. बच्चों को वाचन कौशल विकास के लिए प्रिंट-रिच वातावरण

7. पठन कौशल के विकास के लिए विभिन्न प्रविधियों का उपयोग

8. मुस्कान पुस्तकालय का बेहतर उपयोग

9. कार्यक्रम को सफल बनाने कुछ सुझाव

a. जन-जन को इस अभियान से जोड़ने जागरूकता अभियान

b. शिक्षकों को युवा क्लब की टोली के साथ घर-घर संपर्क

c. बड़ी कक्षाओं/ संस्थाओं को जोड़ना

d. इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु शपथ

e. अगली कक्षा की पुस्तकें पिछली कक्षा को सौंपना

f. प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान

10. उपरोक्त बिन्दुओं के अलावा सभी शिक्षकों को पूरी छूट होगी कि वे अपने क्षेत्र में सभी बच्चों को सफलतापूर्वक पढ़ना सिखाने के लिए नवाचारी कार्यक्रम लेकर आयें।

एजेंडा पांच: आदर्श संकुल बनाने की पहल

दुर्ग के पाटन के संकुल केंद्र पाहन्दा के संकुल समन्वयक श्री ललित बिजौरा ने अपने संकुल को प्रदेश के आदर्श संकुल के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया है। शासन की सभी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के साथ-साथ संकुल के प्रत्येक शाला में बच्चों की उपलब्धि में सुधार, शत प्रतिशत उपस्थिति के साथ बैठकों का आयोजन, शत-प्रतिशत शिक्षकों का पीएलसी से जुड़ाव से लेकर शासन की विभिन्न योजनाओं जैसे शाला अनुदान का उपयोग, युवा एवं इको क्लब, खेलगढ़िया कार्यक्रम, सामुदायिक सहभागिता का लाभ, कबाड़ से जुगाड़ कर सहायक सामग्री का नियमित उपयोग एवं सभी बच्चों की नियमित उपस्थिति एवं उपलब्धि सुधार के लिए नवाचारी प्रयासों को प्रोत्साहित करेंगे। संकुल समन्वयक श्री ललित बिजौरा ने अपनी मेहनत से आगामी सत्र में अपने संकुल को राज्य का आदर्श संकुल बनाने का प्रण लिया है। **सभी संकुल समन्वयक यदि अपने अपने संकुल को आदर्श संकुल बनाने के बारे में प्लान कर काम शुरू करें तो हमारा राज्य गुणवत्ता के मामले में नंबर एक आसानी से बन सकता है।**

एजेंडा छह: अप्रेल में आयोजित रीडिंग कैम्पेन की विशेषताएं

माह अप्रेल में आयोजित होने वाले इस राज्यत्यापी अभियान की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- यह अभियान पूरे राज्य के समस्त शासकीय प्राथमिक शालाओं में एक साथ चलाया जाएगा
- अप्रेल में पूरे माह सभी बच्चों के साथ पठन कौशल विकास पर फोकस होकर ध्यान दिया जाएगा
- स्कूल को एक यूनिट मानते हुए सभी बच्चों के पढ़ सकने की स्थिति में ही उस स्कूल को सफल माना जाएगा
- किसी स्कूल से यदि कोई एक बच्चा भी पढ़ने के मामले में पिछड़ गया तो उस स्कूल को सफल नहीं माना जाएगा
- शिक्षक एवं सभी बच्चे अपने स्कूल को सफल बनाने एक टीम के रूप में मिलकर ऐसे प्रयास करेंगे कि सभी बच्चों को निर्धारित समयसीमा के भीतर पढ़ना आ जाए
- शिक्षकों को पूरे अप्रेल माह में पढने के कौशल विकसित करने हेतु क्या क्या गतिविधियाँ करनी होगी, उसका दिवसवार विवरण सभी शालाओं को उपलब्ध करवाया जाएगा
- शिक्षकों को पठन कौशल विकास के लिए उपयोग में लाए जा सकने योग्य स्व-अधिगम सामग्री उपलब्ध करवाई जाएगी
- बच्चों के पठन कौशल की जांच के लिए संकुल, विकासखंड एवं जिले स्तर पर प्रतियोगताओं का आयोजन किया जाएगा
- प्राथमिक शालाओं द्वारा पठन कौशल में सुधार के लिए किये जा रहे प्रयासों की निगरानी एवं समर्थन निकट के उच्च प्राथमिक/ हायर सेकन्डरी शालाओं के शिक्षकों द्वारा किया जाएगा
- माताओं के समूहों में से चार-पांच पढी-लिखी माताओं को बच्चों के पठन कौशल की प्राप्ति के संबंध में निर्णायक की भूमिका दी जाएगी
- यदि निकट के उच्च कक्षाओं के निर्धारित नोडल शिक्षकों एवं निर्णायक माताओं द्वारा ऐसे बच्चों की पहचान कर ली जाती है जो कार्यक्रम के आयोजन के बाद भी नहीं पढ़ पा रहे हैं, तो ऐसी स्थिति में शिक्षकों को माह अप्रेल के बाद उन्हें अलग से कक्षाएं लेकर पठन कौशल विकसित किया जाना अनिवार्य होगा

- कार्यक्रम की सफलता के लिए युवा क्लब के मंत्रियों का सहयोग लिया जाएगा और ये अपने आसपास से नियमित रूप से पढने के लिए अपरिचित सामग्री एकत्र कर शाला को उपलब्ध करवाएंगे
- स्थानीय सामग्री निर्माण हेतु विभिन्न संस्थाओं / बड़े कक्षाओं के विद्यार्थियों के सहयोग से कार्यशालाओं का आयोजन
- कक्षा पहली दूसरी अध्यापन करने वाले शिक्षकों को बच्चों के घर की भाषा सीखने भाषा सेतु सहायिका एवं स्थानीय भाषा के जानकार शिक्षकों से भाषा सीखने का अवसर एवं समय
- विभिन्न स्तर पर प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए अपरिचित पठन सामग्री राज्य स्तर से उपलब्ध करवाई जाएगी
- माताओं को निर्णायक के रूप में कार्य करने हेतु कामिक स्ट्रिप के रूप में चित्र पुस्तिका उपलब्ध करवाई जाएगी
- निकट की उच्च कक्षाओं के नोडल शिक्षकों को कार्यक्रम क्रियान्वयन में सहयोग हेतु सन्दर्भ सामग्री उपलब्ध करवाई जाएगी
- शिक्षकों द्वारा बच्चों के पठन कौशल विकास हेतु विभिन्न नवाचारी प्रक्रियाओं एवं सहायक सामग्री को एक दूसरे से साझा करना
- किसी एक निर्धारित दिन राज्य स्तर पर वृहद कार्यक्रम आयोजित कर राज्य के सभी बच्चों के पढने के कौशल हासिल करने की घोषणा
- एक साथ राज्य के सभी प्राथमिक शाला के विद्यार्थियों द्वारा वाचन कर उनका लाइव प्रसारण एवं मीडिया कव्हरेज
- प्रत्येक जिले से चयनित विद्यार्थियों की माननीय मुख्यमंत्रीजी से भेंट

एजेंडा सात: पिछली कक्षा के बच्चों को अपनी पुस्तकें देना

माह अप्रेल में आयोजित होने वाले रीडिंग कैम्पेन में बच्चों को पढ़ने के लिए गत वर्ष समर कैम्प के आयोजन में पुस्तक एक्सचेंज करने की भाँति इस वर्ष भी सभी बच्चे अपनी अपनी पाठ्यपुस्तकें पिछली कक्षा के बच्चों को सौंपेंगे | माह अप्रेल में प्रतिदिन बच्चे मुस्कान पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों के वाचन के साथ-साथ अपने मित्रों से प्राप्त अगली कक्षा की पुस्तकों का भी वाचन करेंगे |

एजेंडा आठ: पठन कौशल विकास हेतु अभ्यास

गत वर्ष सभी प्राथमिक शालाओं में मुस्कान पुस्तकालय के अंतर्गत तरंग नामक पुस्तक शिक्षकों के लिए सन्दर्भ साहित्य के रूप में भेजी गयी है | आप बच्चों को पाठ्यपुस्तक से अध्यापन के दौरान जब भी कोई नया वर्ण सिखाना हो तो आप तंरग नामक पुस्तक से सन्दर्भ सामग्री के रूप में अध्ययन कर बच्चों से अभ्यास के लिए पठन लेखन सामग्री सुलभ करवा सकते हैं | इससे बच्चों को पाठ्य-पुस्तकों से इतर अन्य कोई भी सामग्री दिखाई जाए तो वे उसे पढ़ सकेंगे और पढ़कर अर्थों को समझ भी सकेंगे |

उदाहरणस्वरुप मान लीजिये आपने कक्षा में "ऐ" सिखाया | आप तरंग में इस वर्ण को सिखाने के तरीके का अध्ययन करें और उसका उपयोग अपनी कक्षा में कर बच्चों से और अधिक अभ्यास करवा सकते हैं | नीचे दिए सामग्री को देखने पर आप समझ सकेंगे कि-

- सबसे पहले उस ध्वनि से संबंधित सही चित्र बच्चों को पहचानना है
- फिर उसे लिखने का अभ्यास करना है | फिर पुराने सीखे ध्वनि को मात्रा लाकर पढने का अभ्यास करना है | नए वर्ण को अन्य वर्णों के साथ जोड़कर पढ़ना है | इतना हो जाने पर उस नए वर्ण का अधिक से अधिक उपयोग कर लिखी एक सामग्री को पढ़ने का प्रयास करना है | इसे आप श्यामपट में लिखकर बच्चों से पढने का अभ्यास करवा सकते हैं |

सप्ताह-12
दिवस-3

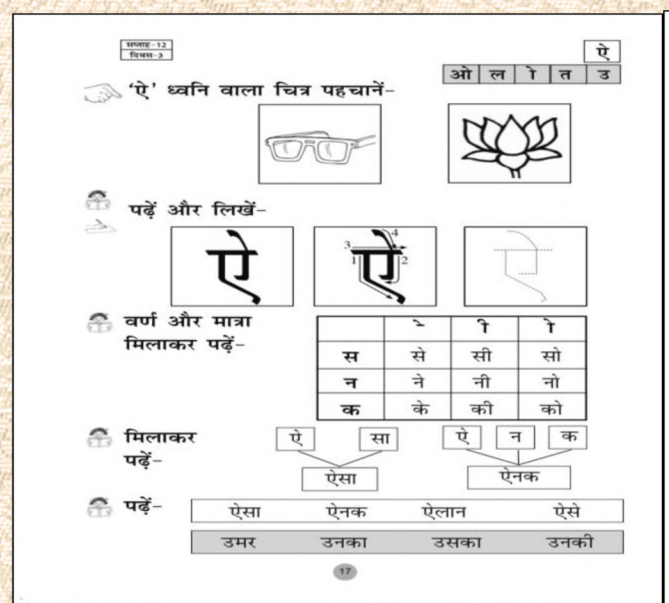

ऐ

ओ | ल | ा | त | उ

'ऐ' ध्वनि वाला चित्र पहचानें-

पढ़ें और लिखें-

ऐ

वर्ण और मात्रा मिलाकर पढ़ें-

	े	ी	ो
स	से	सी	सो
न	ने	नी	नो
क	के	की	को

मिलाकर पढ़ें-

ऐ + सा → ऐसा

ऐ + न + क → ऐनक

पढ़ें-

ऐसा ऐनक ऐलान ऐसे

उमर उनका उसका उनकी

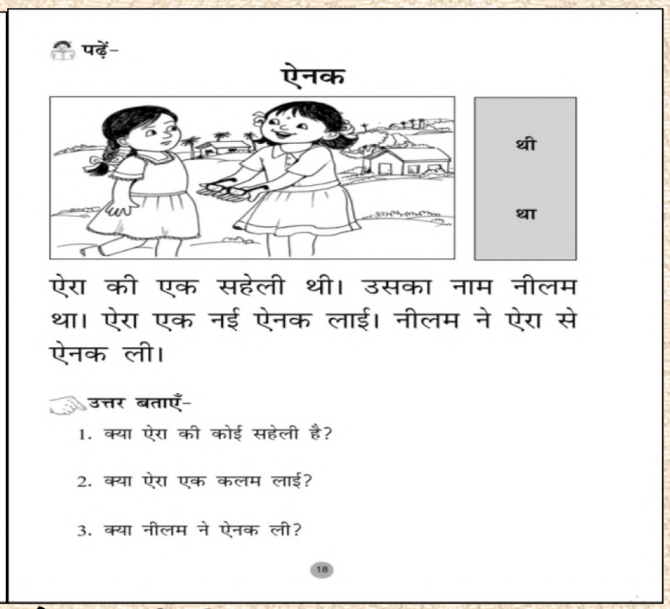

17

पढ़ें-

ऐनक

थी

था

ऐरा की एक सहेली थी। उसका नाम नीलम था। ऐरा एक नई ऐनक लाई। नीलम ने ऐरा से ऐनक ली।

उत्तर बताएँ-

1. क्या ऐरा की कोई सहेली है?
2. क्या ऐरा एक कलम लाई?
3. क्या नीलम ने ऐनक ली?

18

कक्षा पहली में हिन्दी सिखाने वाले सभी शिक्षक एक बार मुस्कान पुस्तकालय से तरंग को देखकर उसे सन्दर्भ के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयास करें |

एजेंडा नौ: परियोजना विजयी -जीवन कौशल की शिक्षा

राज्य में कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय, आश्रम शालाएं एवं बालिका पोर्टा केबिन में उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत बालिकाओं के लिए रूम टू रीड के सहयोग से "परियोजना विजयी" कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है | इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं -

- सभी अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें |
- रोज़गार से जुड़े मूलभूत कौशल प्राप्त कर सकें और;
- जीवन के जरूरी निर्णय, पूरी समझ व जानकारी के साथ ले सकें और एक सफल व विजयी जीवन का मार्ग प्रशस्त करें|

जीवन कौशल क्या है?

जीवन कौशल यानि वे कुशलताएँ या कौशल जो हमें एक खुशहाल व सार्थक (Productive) जीवन जीने में मदद करे| ऐसी मनो-सामाजिक क्षमतायें/दक्षतायें व पारस्परिक कौशल, जो एक व्यक्ति को जानकारी आधारित निर्णय लेने, , समस्याओं का समाधान करने, रचनात्मक तरीके से सोचने, विवेचनात्मक होने, स्वस्थ रिश्ते कायम रखने, सहानुभूति व समानुभूति करने व एक संतुलित तथा सार्थक जीवन जीने में मदद करें, को जीवन-कौशल कहा जाता है |

इस कार्यक्रम के माध्यम से हम निम्नलिखित कौशलों में सुधार हेतु काम करते हैं :

- आत्मविश्वासी होने की कुशलता
- भावनाओं को त्यक्त कर पाने और उन पर काबू कर पाने की कुशलता
- समानुभूति महसूस कर पाने की कुशलता
- आत्म नियंत्रण की कुशलता
- विवेचनात्मक सोच रखने की कुशलता
- निर्णय लेने का कौशल
- निरंतर प्रयासरत रहने का कौशल
- सम्प्रेषण का कौशल
- समस्याएँ सुलझाने का रचनात्मक कौशल
- संबंधों को बनाने की कुशलता

ये सभी कौशल बच्चों के लिए स्कूल और स्कूल के बाद भी, दोनों ही स्थानों पर, महत्वपूर्ण है | इस कार्यक्रम के बारे में समझने के लिए निकट के केजीबीवी में आप जाकर देख और समझ कर अपने बच्चों को भी समझा सकते हैं |

एजेंडा दस: स्पोकन अंग्रेजी कैम्प के लिए तैयारी

राज्य में अंग्रेजी शिक्षा को बेहतर करने एवं कक्षा में बच्चों के साथ अंग्रेजी में वार्तालाप करना सुनिश्चित करने के उद्देश्य से शिक्षकों को स्वयं अंग्रेजी बोलना सीखने के लिए पांच पांच दिवसीय कैम्प आयोजित करने की योजना है | इन कैम्प में शामिल होने के लिए बहुत से शिक्षकों से रूचि लेकर आवेदन किया है | परन्तु किसी भाषा वह भी विदेशी भाषा को सीखने के लिए ऐसे पांच दिनों का प्रशिक्षण देने भर से काम नहीं चलेगा | यह प्रशिक्षण केवल अब तक सीखे गए चीजों को बिना हिचक बोलने में सहयोग मात्र कर सकेगा | इसलिए यदि आप ऐसे प्रशिक्षण का वास्तव में लाभ लेना चाहते हैं तो इसमें शामिल होने से पूर्व नियमित रूप से इन बातों का पालन करें-

- अंग्रेजी का एक्सपोजर नियमित रूप से लेने के लिए अपने साथियों के साथ एक प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का गठन करें जिसमें सभी मित्र आपस में अंग्रेजी में बात करने से लेकर उस भाषा में बहुत से रोचक सामग्री एकत्र कर आपस में साझा कर सके | इस पीएलसी के माध्यम से आप अपनी अंग्रेजी में बोलने की झिझक को धीरे-धीरे दूर करने का प्रयास करें |
- आप नियमित रूप से अंग्रेजी में समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ एवं डॉक्यूमेंटरी फिल्म आदि देखना जारी रखें | शुरुआती दौर में अंग्रेजी फिल्म देखते समय उसमें हिन्दी टायटल फिर अंग्रेजी टायटल के साथ फिल्म देखकर समझने का प्रयास करें | धीरे-धीरे सुनने और समझने का प्रयास करें |
- अंग्रेजी बोलना सीखने के लिए आजकल बहुत से मोबाइल एप्प उपलब्ध हैं | इनमें से कुछ एप्प के माध्यम से आप स्वयं बोलने का अभ्यास नियमित रूप से जारी रख सकते हैं | इसे नियमित रूप से उपयोग करना शरू करें |
- अपने पहुंच में नियमित उपयोग हेतु शब्दकोष भी पास रखें | आजकल बोलने वाली डिक्शनरी भी आती है जिसमें शब्द डालने पर उसका उच्चारण भी आप सुन सकते हैं | टेक्नोलोजी का उपयोग कर अंग्रेजी आसानी से सीखी जा सकती है |
- इस कैम्प में जो महत्वपूर्ण नियम हैं, वे इस प्रकार हैं-
    - आपको सुबह से रात तक पूरे समय केवल अंग्रेजी में बोलना होगा
    - इस कैम्प में कोई लेक्चर नहीं होगा और प्रतिभागी ही गतिविधि करेंगे
    - गलत अंग्रेजी बोलने पर कोई भी एक दूसरे का मजाक नहीं उडाएगा
    - आपको विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रदर्शन भी अंग्रेजी में करना होगा

कैम्प के लिए अच्छी तैयारी कर आने से ही आपको इस कैम्प का सही लाभ मिल सकेगा | अभी समय हैं, आपस में पीएलसी बनाकर काम शुरू कर देवें |